स्त्री संघर्ष का दस्तावेज : “ अन्या से अनन्या ”

रंजन.एम.परमार

पीएच.डी स्कोलर

साहित्य की सभी विधाओ में आत्मकथा लिखना बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है | आत्मकथा का मतलब एक ऐसी कथा जिसका सम्बन्ध लेखक के जीवन से होता है| जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी तरह आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का दर्पण होती है | आत्मकथा व्यक्ति के जीवन का ही नहीं अपितु समय एवं परिवेश का भी ब्यौरा होती है |

“ आत्मकथा में लेखक जीवन अनुभव द्वारा अर्जित अनूभूतियो को अभिव्यक्त करता है | आत्मकथा में लेखक नितांत व्यक्तिगत अनुभव को व्यकत करने के साथ समसामायिक परिवेश से अपने को मुक्त नहीं कर पता |”.....(1)

जब आत्मकथा लेखन में एक स्त्री हाथ आजमाती है तो उसके लिए यह कार्य अधिक कठिन एवं चुनौतिपूर्ण हो जाता है । फिर भी हिन्दी में कई महिला लेखिकाओने आत्मकथा लिखी है, जो नारी संघर्ष के कई पहलुओ को हमारे सामने रखती है। ऐसी ही चर्चित आत्मकथाओ में प्रभा खेतान की “अन्या से अनन्या” का विशिष्ट स्थान है। प्रभा खेतान का मत है,

“ आत्मकथा लिखना तो स्ट्रिप्टीस का नाच है | आप चौराहे पर एक – एक कर कपडे उतारते जाते है | लिखनेवाले के मन में आत्म प्रदर्शन का भाव किसी न किसी रूप में मौजूद रहता है | मन के किसी कोने में हल्की सी चाहत रहती है, कि लोग उसे गलत नहीं समझे की जो कुछ भी वह लिख रहा है उसे सही परिप्रेक्ष्य में लिया जाए.... | ”.....(2)

उन्होंने आत्मकथा के महत्व को लेकर लिखा है, कि " स्पष्टरूप से लिखी गई आत्मकथा का अपना महत्व है | इतना भी जानती हूँ की उपन्यास से अधिक दिनों तक आत्मकथा जीवित रहती है | किसी भी आत्मकथा में एक " मैं " है जो प्रमाणिक रूप से अपनी यात्रा कर रहा है जिसे ख़ारिज करना किसी के लिए संभव नहीं ..... पाठक भी इस विशिष्ट्ता को विशेष व्यक्ति को पहचानता है | पाठक और लेखक के बीच एक साझेदारी है | दशको बाद भी यह कहानी जिन्दा रहती है और रहेगी ......। " (3)

समकालीन नारीवादी लेखिकाओ में प्रभाखेतान सर्वोपरि नाम है | उनका साहित्य ही उनकी पहचान है | "अन्या से अनन्या" स्त्री जीवन की पीड़ा संघर्ष का दस्तावेज है चूँकि इसमे सिर्फ प्रभाजी की पीड़ा या संघर्ष नहीं है , बल्कि समाज की उन सभी स्त्रिओ की पीड़ा एवं संघर्ष की अभिव्यक्ति है जिन्होंने भोगा है | स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में सदियों से संघर्ष कर रही है | उपेक्षित जीवन को अपना नसीब माननेवाली नारी प्रेम के अभाव में कुंठित एवं व्यथीत हो जाती है | वह लड़की जिसके बचपन को कोई अपना कहा जाने वाला ही कुचल देता है। बड़े भाई से बलत्कृत एवं बचपन से परिवार में माँ के प्यार से वंचित एवं उपेक्षित प्रभाजी के जीवन की प्रेम ही सबसे बड़ी कमी रही है | उन्ही के शब्दों में,

" कैसा अनाथ बचपन था | अम्मा ने कभी मुझे गोद में लेकर चूमा नहीं | में चुपचाप घंटो उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती | शायद अम्मा मुझे भीतर बुला ले | शायद .... हाँ शायद अपनी रजाई में सुला ले | मगर नहीं एक शाश्वत दूरी बनी रही हंमेशा हम दोनों के बीच | अम्मा मेरी बातो को समझ नहीं पाती थी | " ....(4)

पुरुष प्रधान समाज ने हंमेशा नारी को अपने अनुरूप जीवन जीने के लिए मजबूर किया है | नारी भी अपने आपको पुरुषो के द्वारा निश्चित साँचे में ढालती है ओर इसके विरोध में जिस ने आवाज उठाई वह समाज की द्रष्टि में हिन् बन जाती है | आज भी स्वयम को तलाशती एवं अपने अस्तित्व के लिए स्त्री संघर्ष करती है | " अन्या से अनन्या " में अविवाहित, आत्मनिर्भर एवं अपने अस्तित्व को तलाशती हुई स्वाभिमानी स्त्री के कटु एवं भीषण संघर्षमय पक्ष को उजागर किया है | प्रभाजी का बचपन प्यार एवं पारिवारिक उपेक्षा में व्यतीत हुआ है और उनका जीवन सामाजिक उपेक्षा में व्यतीत हुआ है | विवाह के बाद स्त्री अपना सब कुछ छोड़कर एक ऐसे व्यकित के लिए अपना जीवन समर्पित कर देती है जिसे परमेश्वर उपाधि प्राप्त है लेकिन क्या कोई पुरुष एक स्त्री के लिए बलिदान दे सकता है जी सकता है जितना स्त्री |

" औरत जैसे पुरुष के लिए जीती है पुरुष भी क्यों नहीं औरत के लिए जी पाता ? " .....(5)

कभी सुरक्षा के नाम पर तो कभी संस्कार के नाम पर स्त्री का शोषण ही हुआ है | उसके लिए सती सावित्री का एक आदर्श निश्चित किया गया है | पाप और पुण्य जैसे मिथक स्त्री के सदर्भ में ही क्यों निश्चित किये जाते है ? क्या यही स्त्री की दुनिया है ? वैश्विक संदर्भ में नारी की स्थिति भारत की नारी से भिन्न नहीं है | इस आत्मकथा में भारतीय एवं अमरीकी औरत के भयानक सच को प्रस्तुत किया है,

"हमारी औरत वह चाहे बाल कटी हो या गॉव- देहात से आई हो कही भी सुरक्षित नहीं उनके साथ कुछ भी घट सकता है | सुरक्षा का आश्वासन पितृसत्ताक मिथक है| स्त्री कभी सुरक्षित थी ही नहीं | पुरुष भी इस बात को जानता है | इस लिए

सतीत्व का मिथक संवंधित करता रहता है | सती सावित्री रहने का निर्देशन स्त्री को दिया जाता है | ''.....(6)

भारतीय समाज में विवाह को एक संस्कार माना जाता है | समाज में विवाहिता को जितना महत्व दिया जाता है | उतना मान सम्मान अविवाहिता को नहीं दिया जाता | विवाह नामक संस्था में जिस प्रेम की परणिती होती है, वह व्यक्ति की वैयक्तिक स्वतंत्रता को बाँधती है | प्रभाजी ऐसे व्यक्ति के प्यार में पागल थी जो उनसे २० वर्ष बड़े थे और विवाहित थे | उन्होंने पूरी जिंदगी एक ऐसे व्यक्ति के नाम कर दी, जिन्होंने उन्हें कभी पत्नी का दर्जा नहीं दिया | जीवनभर प्रेमिका बनकर अपने रिश्ते को ईमानदारी से निभाती है | भारतीय समाज में प्रेमिका को महत्व नहीं दिया जाता | जिस समाज में विवाहिता स्त्री को निरंतर अपने अस्तित्व को लेकर संघर्ष करना पड़ता है, वहाँ प्रेमिका के अस्तित्व पर प्रश्नचिहन लग जाता है | प्रभाजी को भी अपने अविवाहित रिश्ते को लेकर समाज से संघर्ष करना पड़ा है | उनके मन में यह आत्मसंघर्ष है, कि उसकी स्वयं की पहचान क्या है ?

“ मै प्रभा खेतान ... मै कोन हूँ ? क्या मेरी कोई पहचान नहीं है ? क्योंकि मेरी शादी नहीं हुई , मै विधवा नहीं ..... क्योंकि कोई दिवंगत पति नहीं , मै कोठे पर बैठी हुई रंडी भी नहीं ... क्योंकि मै अपनी देह का व्यापार नहीं करती | मै किसी पर निर्भर नहीं करती स्वावलम्बी हूँ ,। ''.....(7)

“अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, ऑंचल मै है दूध और आँखों में पानी ||”

ऐसी दकियानूसी समाज के परंपरागत मापदंड का प्रभाजी अस्वीकार करती है | उनका मानना है, की विवाह ‘ ओवरडेटेट संस्था है इसलिए उस संस्था को महत्व देने की जरुरत नहीं है | प्रभाजी दाम्पत्य जीवन के परंम्परागत मापदण्डो का

अस्वीकार करती है | अमेरिका के स्त्री जीवन के अंतर्गत डॉक्टर डी और मिसेज डी का वैवाहिक जीवन,आइलिन का जीवन,मरील की गृहस्थी को प्रस्तुत किया है | जब प्रभाजी मरील की बेटी लारा से पूछती है, की तुम अपनी माँ से क्यों नफ़रत करती हो ? तब उसका जवाब ही समाज की सच्चाई को प्रस्तुत करता है |

" नहीं, दरअसल हम सब मै और मेरी बहेन नैन्सी एक बीमार व्यवस्था की उपज है |" ....(8)

प्रभाजी पत्नीत्व नामक संस्था एवं समाज से पूछती है क्या सारी वैधता सात फेरो से मिलती है ? क्या विवाह व्यवस्था ही शाश्वत सत्य है ? क्या विवाह से परे किसी रिश्ते का कोई वजूद नहीं..?

" त्रासदी तो यह थी कि न हमारी शादी हो सकती थी और न हम अलग हो पा रहे थे | क्या इन सामाजिक मान्यताओ से पहले कोई समाज नहीं था ? क्या उस समाज में स्त्री पुरुष के विवाहेत्तर सम्बन्ध नहीं हुआ करते थे ? " .....(9)

प्रभाजी परम्परागत रुढ़िवादी समाज के सामने खुलकर अपने आपको डॉ.सर्राफ की प्रेमिका घोषित करती है | जीवन में आर्थिक परेशानीयाँ झेलने के बावजूद कभी डॉ.साहब से आर्थिक सहायता नहीं मागती और परंपरागत " रखैल " का साँचा तोड़ती है | क्यों स्त्री के लिए ही " रखैल " का उपनाम निश्चित किया जाता है ? ऐसा कोई उपनाम एक पुरुष के लिए क्यों नहीं निश्चित किया जाता ? प्रभाजी भी अपने अविवाहित रिश्ते को लेकर समाज की नजर में पथभ्रष्ट और अपवित्र थी | वे अन्या से थी कमतर अन्या थी |

" मै वह अन्य थी जिसे निरंतर निर्मित किया जा रहा था क्योंकि महज मेरा होना पत्नित्व नामक संस्था को चुनौती दे रहा था | सहमति की खोज में मै बुरी तरह

थकने लगी थी | मै बस पति पत्नी के बिच " एक वह " थी | एक बाहरी तत्व अनचाही स्वीकृति |" .....(10)

इस आत्मकथा से प्रभावित होकर अभयकुमार दुबे ने लिखा है ,

" प्रभा खेतान ने आत्मकथा लिखकर स्त्री जीवन की दुर्बलताओ के प्रामाणिक ब्यौरे पेश किए और उनके आईने में समाज को मजबूर किया है, कि वह स्त्री-पुरुष संबधो पर एक बार फिर से सोचे |" .....(11)

जब डॉ.सर्राफ की पचास की उम्र में केंसर की बीमारी से मुत्यु हो जाती है, तब डॉ. साहब के शव की फेरी में प्रभाजी को शामिल नहीं किया जाता | क्योंकि उन्हें परिवार का सदस्य समझा नहीं जाता |तब सवाल उठता है, कि जिसके लिए अपनी जिंदगी समर्पित कर दी उसने जीवन में उसकी कोई पहचान ही नहीं ?

" उनकी स्मरण सभा में उन्हें कई रूपों में संबोधित और याद किया गया | कलकते के वरिष्ठ नागरीक समाजसेवी सफल डॉक्टर... पीछे पत्नी और बच्चो को छोड़कर गए है | प्रभा खेतान नामक स्त्री का कही भी जिक्र नहीं था । " .....(12)

प्रभा खेतान की आत्मकथा का मूल्याकन करते हुए डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र ने लिखा है ,

"अन्या से अनन्या प्रभा खेतान नामक लेखिका की नियति का इतिवृत भले ही हो, भारतीय नारी की दशा दिशा का दर्पण तो यह निश्चित ही है | " .... (13)

इस तरह "'अन्या से अनन्या" में नारी जीवन को बेबाक बिना किसी दुराव छिपाव से प्रस्तुत किया है | स्वैच्छिक प्रेम को समाज सार्थकता दे नहीं पाता किसी एक को ईमानदारी से प्यार करना पवित्रता नहीं है ? इस आत्माकथा ने स्त्री पुरुष

संबध पर समाज को नये तरह से सोचने पर मजबूर किया है | सही मायने मै देखा जाये तो यह आत्मकथा उपेक्षित होकर अकेलेपन को भोगनेवाली स्त्री संघर्ष की त्रासदी है |

संदर्भ

(१) कलम पत्रिका, दिसम्बर-२०१२ पृ . - ८८

(२) अन्या से अनन्या - प्रभा खेतान - पृ . - २५५

(३) वही , पृ . - २५५

(४) वही , पृ . - ३१

(५) वही , पृ . - २२३

(६) वही , पृ . - २०८

(७) वही , पृ . - १२

(८) वही , पृ . - १६३

(९) वही , पृ . - १७५

(१०) वही , पृ . - १७५

(११) हंस पत्रिका , नवम्बर - २००८ पृ . - ७०

(१२) अन्या से अनन्या - प्रभा खेतान - पृ . - २८७

(१३) हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ , सरजू प्रसाद मिश्र , - पृ . - १११